॥ सुयं मे आउसं ॥

श्रुतदीप रिसर्च फाउंडेशन का संवाद-सेतु

श्रुतदीप

विक्रम संवत २०७५ • वर्ष : ३ • अंक : १ • जून २०१९

जैनानंद पुस्तकालय – एक रत्न संग्रह

– मुनिश्री वैराग्यरतिविजय गणी

सागर में मोती की खोज के लिए लगाई डुबकी से अचानक एक अनमोल रत्न हाथ लग जाने से जैसी खुशी का अहसास होता है, कुछ वैसी ही प्रचुर आनंद की अनुभूति **जैनानंद पुस्तकालय** स्थित हस्तलिखित संग्रहालय को देखकर होती है। वर्तमान समय में संपूर्ण भारत में लगभग एक हजार से अधिक संग्रहालय हैं, मगर जैनानंद पुस्तकालय के संग्रहालय का स्थान सर्वोपरि है। इस संग्रहालय की स्थापना वि. सं. १९७४ में वैशाख शुक्ल सप्तमी के दिन प. पू. आ. श्री **आनंदसागरसूरीश्वरजी** महाराजा के द्वारा हुई है। उनके जीवन वृत्तांत से ज्ञात होता है कि –पूज्य सागरजी महाराज को हस्तलिखितों के संग्रह का व्यसन था। बिखरी हुई अथवा बेचने के लिए आए हुए हस्तलिखित वे रख लेते थे। बडा संग्रह होने के पश्चात उसे सुरक्षित करने के लिए एक पुस्तकालय की जरुरत महसूस हुई। उन्होंने सुरत के श्रावकों को प्रेरणा दी। फलतः इस संग्रहालय की स्थापना हुई। यहां प्राचीनतम हस्तलिखित पांडुलिपियों की संख्या कम है मगर मरुगुर्जर कृतियों के बजाय संस्कृत–प्राकृत कृतियों की हस्तप्रतों का प्रमाण सर्वाधिक है। पुनरावर्तित अर्थात् एक ही कृति की अनेक आवृत्तियां कम है। इनमें भी प्रचलित कृतियो की अपेक्षा अप्रचलित कृतियों की संख्या अधिक है। इन सब विविध–विशेषताओं के कारण एवं संस्कृत–प्राकृत साहित्य के ऐतिहासिक दृष्टिकोण से यह संग्रहालय विशेष महत्त्वपूर्ण है।

उपरोक्त संग्रहालय की सबसे बडी विशेषता यह है की, यहां उपलब्ध ५००० पांडुलिपियों में से लगभग ११७८ प्रतियां शुद्ध–संशोधित स्वरूप में हैं। अर्थात कुल प्रतियों का पांचवा भाग पूर्ण शुद्ध किया जा चुका है। औसतन दृष्टि से हस्तलेखन क्षेत्र में यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। वि. सं. १९५१ तक की प्रतियां प. पू. आ. श्री आनंदसागरसू. महाराजा के स्वहस्तों से शुद्ध हो चुकी है। सुरत के हिरालाल रसिकलाल कापडिया जैसे पंडितश्रावकों द्वारा भी यहां की हस्तप्रतों का शुद्धिकरण हुआ है।

जैनानंद पुस्तकालय में उपलब्ध **कुल ४६९८ हस्तप्रतियों** के प्रतिलेखन वर्षानुसार क्रम विभाजन निम्न स्वरूप में हैं–

चौदहवीं शताब्दी की ३, पन्द्रहवीं शताब्दी की १८, सौलहवीं शताब्दी की ५९, सत्रहवीं शताब्दी की १२६, अठराहवीं शताब्दी की १८२ उन्नसवीं शताब्दी की ३१९ बीसवीं शताब्दी की १३०५ और इक्कीसवीं शताब्दी की ११६ (कुल २१४०) हैं। सचित्र हस्तप्रतों की संख्या १६ हैं।

प. पू. आ. श्री आनंदसागरसू. महाराजा द्वारा लिखी गई प्रतों की संख्या ९ हैं और उनके द्वारा सुधारित प्रतियों की संख्या लगभग ३२० हैं। ऐसा ज्ञात होता है कि, वि. सं. १९५१ तक

संग्रहित हस्तप्रतों का शुद्धिकरण उन्हीं के श्रीहस्तों से हुआ है। उनके द्वारा रचित कृतियों की संख्या २२३ हैं। इनमें मूल कृतियां २१० एवं अन्य १३ कृतियां टीका स्वरूप हैं।

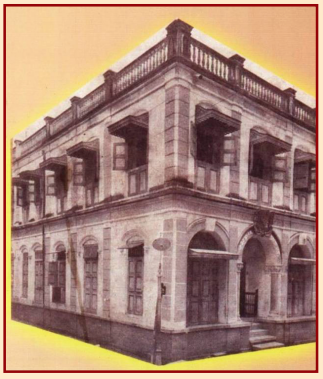

जैनानंद पुस्तकालय

जैनानंद पुस्तकालय से एक और भी रोमांचक इतिहास जुडा हुआ है। आज से सौ वर्ष पूर्व पूज्य **आत्मारामजी महाराज** की पाट–परंपरा में आ. श्री **कमलसू. महाराजा** हुए हैं, जो निस्पृह शिरोमणि थे। अपने जीवन काल में उनके हाथों से अनेक शासन प्रभावक कार्य संपन्न हुए, मगर एक स्थान पर भी उने इन कार्यों के साथ नाम–गौरवता के आलेख नहीं हैं। उनका सबसे बडा योगदान प्राचीन शास्त्रों की सुरक्षा के संदर्भ में रहा है। उस काल में वर्तमान समय जैसी प्रकाशन सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। फोन और फोटोग्राफी जैसी सुविधाएं तो मात्र राजा–महाराजाओं और अंग्रेज अमलदारों के पास ही दिखाई देती थी। झेरोक्स, माइक्रोफिल्म आदि जैसे आधुनिक साधनों के नाम भी नहीं सुने गये थे। उस काल में प्राचीन हस्तप्रतों की सुरक्षा का प्रश्न अतिविकट था। ऐसी परिस्थिति में हाथों से लिखवाना, सुनाना, बोलना और शास्त्र रचना के बारे में काफी कठिनताएं खडी थी। सर्वप्रथम तो लिखने के लिए प्रतों की आवश्यकता थी। कहां से और कैसे प्राप्त कीया जायें, यही विकट समस्या थी। उस काल के अनेक हस्तप्रत भंडार तत्कालीन यतियों के कब्जे में थे, वे

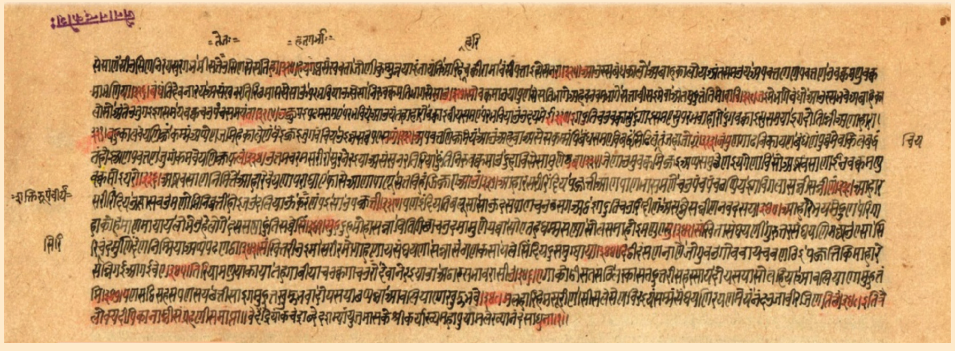

आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजा ने स्वहस्ते शुद्ध की गई हस्तप्रत

उस समय के संवेगी साधुओं को अपने संग्रहालयों में आने भी नहीं देते थे। अनेक संग्रहालय अंग्रेजी सरकार के कब्जे में जा चुके थे। इन सब कारणों के हस्तप्रत मुहय्या कर पाना ही कठिन था।

उस काल की दूसरी कठिनता थी, पुनर्लेखन की । हस्तप्रतों की पांडुलिपियां मिल भी जाती, तो समस्या खडी होती थी कि, उनको किस तरह लिखवाया जाये? तीन समस्या प्रमुख रूप से इस तरह थी–

१) अनेक संग्रहालय दूर-दराज क्षेत्रों में थे। कुछ गुजरात में, कुछ राजस्थान अथवा सिंध (वर्तमान पाकिस्तान) जैसे इधर उधर बडे अन्तरों की दूरी में थे।

२) साधु भगवंतो की संख्या काफी कम थी, जो थे वे सब जगह जा नहीं पाते थे अथवा एक स्थान पर लंबे समय तक रुक नहीं पाते थे.

३) सभी साधुभगवंतो को इस प्रकार के लेखन का अनुभव नहीं था।

४) लिखी गई प्रतियों में शुद्धता की प्रामाणिकता।

आचार्यदेव ने उपरोक्त सभी मुद्दों को लक्ष्य में रखकर समुचित व्यवस्था करवाई। फिर भी अनैक प्रतियों का शुद्धिकरण बाकी है।

बडा मुद्दा यह भी था की लिखी गई हस्तप्रतों का सुनियोजित संरक्षण के लिए योग्य संचालन एवं सुव्यवस्थित भंडारों के व्यवस्थापन का। अंतिम प्रश्न था उपरोक्त सभी कार्यो के लिए समुचित धन की व्यवस्था का।

प. पू. आ. श्री **कमलसू.** महाराजा ने उपरोक्त सभी मुद्दों के समाधान ढूंढकर ज्ञान की विरासत को जीवंत रखा। उनके प्रौढप्रतापी प्रभाव से अनेक तत्कालीन राजा-महाराजा-सेठ साहुकारो ने भक्ति सहित उनके कार्य में अपना योगदान प्रदान किया। उनके प्रभाव से लगभग १७ से अधिक भंडारों से अनेक हस्तप्रतें प्राप्त करने की मंजूरी मिली। अनेक लोग इस अभियान से जुडने लगे। अनेक लहिया तैयार हुए, उनके लिए समुचित वेतन आदि की व्यवस्था के साथ उन्हें अनुभव समृद्ध बनाया गया। परिणामतः अनेक प्रतियों का उद्धार हुआ।

आचार्यदेव ने लिखवाई हस्तप्रतों अपनां निजी हक नहीं रखा। इसके लिए पृथक व्यवस्था करने हेतु सुरत संघ को जिम्मेदारी सौंपी। संग्रहालयों में हस्तप्रतों के दीर्घकालीन संरक्षण हेतु जरुरी नियमावली तैयार करवाई।

वि. स. १९८१ में आ. **श्रीकमलसू. महाराजा** का सुरत के गोपीपुरा स्थित सेठ नेमचंद मिलापचंद की वाडी के उपाश्रय में चातुर्मास आयोजित हुआ। उस दरम्यान उन्हीं के द्वारा लिखवायी गई हस्तलिखित पुस्तकों का दोबारा पुनर्लेखन का मनोदय बना। यह वह काल था, जब मुद्रण कला का विकास तो हो चुका था। अनेक पुस्तकें प्रकाशित भी होने लगी थी। परन्तु मशीन से तैयार कागज का स्तर इतना निम्न कक्षा का था, वह कागज लंबे समय तक टिक नहीं पाता था। यह बात आचार्यश्री ने उपस्थित श्री संघ के सामने रखी। श्री संघ ने उनके उपदेश को भक्तिपूर्वक स्वीकार करते हुए तत्काल बडी धनराशि जमा कर ली। उस समय २२५०० रूपये जमा हो गये। (जो आज की तुलना में लगभग ९० लाख रूपये होते हैं।) **'आचार्य श्रीमद् विजयकमलसूरीश्वरजी महाराजा हस्तलिखित पुस्तकोद्धार फंड'** नामक संस्था की स्थापना हुई। संस्था का उद्देश्य रखा गया कि – जिन प्रतों की आवृत्तियां कम है, उनका पुर्नलेखन लहियाओं द्वारा करवाना। इसके लिए उच्चकोटि के कागज का उपयोग करना और तैयार संस्करणों का समुचित संरक्षण करना।

उपरोक्त लक्ष्य के साथ इस संस्था द्वारा पिछले २० वर्षो में १३०० से अधिक हस्तप्रतें लिखवाई जा चुकी हैं। सं २००४ में इस कार्य की रिपोर्ट भी प्रकाशित हुई हैं। (संवत २००४ की रिपोर्ट में इन बातों का उल्लेख है। उनके निर्देशन में लिखी गई प्रतियों में से अनेक प्रतियां मूल कृतियों (प्रतियों) से मिलान करके प्रमाणित भी की गई है।)

जैन जगत में ऐंसे अनेक खोजी महापुरुष हुए हैं, जिनके अथक प्रयासों से ऐसे कठिन कार्य संपन्न हुए हैं। साधनों के अभाव में अनेक शोधकर्ताओं को ऐसा साहित्य सहजता से प्राप्त हो सके, उनका कार्य सहज बन सके इसके लिए संस्थाद्वारा मार्गदर्शी सूचिपत्र भी तैयार किया गया है।

आचार्यश्री ने विक्रम संवत १९७९ में छानी, पाटण, ईडर आदि स्थानों पर हस्तप्रतों भंडारो की स्थापना करवायी।

वर्तमान में **जैनानंद पुस्तकालय** के व्यवस्थापक प. पू. आ. श्री **आगमचन्द्रसागरसू.** म. के मार्गदर्शन में प्राचीन श्रुतविरासत का जतन हो रहा है। श्रुतज्ञान और अपने प्रकाश से श्रुतसंरक्षक महापुरुषों की यशोगाथा का यह विशाल रत्नसंग्रह चिरकाल तक सुरक्षित रहे और आपने प्रकाश से श्रुतसंरक्षक महापुरुषों की यशोगाथा भी गाता रहे यही शुभभाव!

(मुल गुजराती लेख का हिंदी स्वरूप–ओमजी ओसवाल)

समाचार

दि. ०९/०५/२०१९ वैशाख सुद पंचमी के शुभ दिन प.पू.आ. श्री **विजयरत्नाकरसूरिजी** म.सा., प.पू.आ.श्री **विजयरत्नसंचयसूरिजी** म.सा. एवं पू. गणिवर्य **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा. की पावन निश्रा में ताडपत्रीय शास्त्रांकन परियोजना **अक्षरश्रुतम्** का संघार्पण समारोह संपन्न हुआ।

दि. ११/०५/२०१९ के दिन माधवबाग जैन देरासर, चंदावाडी, मुंबई में **पू.आ.श्री कमलरत्नसूरिजी म.सा., पू.आ.श्री अजितरत्नसूरिजी म.सा., पू.आ.श्री योगतिलकसूरिजी म.सा.,** आदि साधु-साध्वीजी भगवंतों की पावन निश्रा में **श्रुतभवन संशोधन केंद्र** द्वारा प्रकाशित **काव्यानुशासन** (गुजराती अनुवाद **–पू.मु.श्री क्षेमरत्नविजयजी म.सा.**) ग्रंथ का विमोचन समारोह संपन्न हुआ।

पूज्य पितृगुरुदेव का परम की और प्रस्थान

परम पूज्य, परम शासन प्रभावक व्याख्यानवाचस्पति आचार्यदेव श्रीमद् **विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा के शिष्यरत्न पूज्य मुनिराज श्री **संवेगरतिविजयजी** म.सा का सं २०७५ वैशाख वद ४ दिनांक २२ मई २०१९ बुधवार प्रातः ६.३७ बजे समाधिपूर्वक कालधर्म हुआ। उनका जन्म वि.सं. २००२ मार्गशीर्ष शुक्ल ६+७ मंगलवार दि. ११-१२-४५ के दिन मुंबई में हुआ था। उनका पूर्वावस्था का नाम सुरेश हरिदास भायाणी था और माता का नाम सुशीलाबेन था।

वि. सं. २०३२ में पुणे स्थित आचार्यदेव के चातुर्मास दरम्यान निरंतर प्रवचन श्रवण से श्री सुरेशभाई के अंतकरण में दीक्षाग्रहण के भाव प्रगट हुए। वि. सं. २०४० वैशाख वद ९ के दिन गुरुदेवश्री के ही वरद हाथों से पालीताना में उन्होनें अपने दोनों पुत्रों के साथ पारमेश्वरी प्रवज्या का स्वीकार किया एवं अनुक्रम से पू. मुनिश्री **संवेगरतिविजयजी** म. सा., पूज्य मुनिश्री **वैराग्यरतिविजयजी** म.सा. (वर्तमान गणिवर्य) एवं पूज्य मुनिश्री **प्रशमरतिविजयजी** म. सा के नाम से सुपरिचित बनें।

उनकी प्रारंभिक ग्रहण एवं आसेवन शिक्षा पूज्य आचार्यदेव श्री **गुणयशसूरीश्वरजी** म. सा तथा पूज्य आचार्यदेव श्री **कीर्तियशसूरीश्वरजी**. म. सा की निश्रा में संपन्न हुई। समुदाय के अनेक आचार्य भगवंतो के सानिध्य में भी उन्होंने विपुल ज्ञानार्जन किया। दीक्षा समय से ही उनके अंदर अद्भुत स्वाध्याय प्रेम झलकता रहा। अंतिम समय तक धर्मरत्न प्रकरण की गाथाएं कंठस्थ करने का उनका उपक्रम चलता रहा। वे द्रव्य गुण पर्याय के रास का पठन सात बार कर चुके थे। सन्मतितर्क प्रकरण की वाद महार्णव टीका कें दो भागों का हिन्दी से गुजराती में उनके हाथों से अनुवाद हुआ। गुरुदेव आचार्यश्री श्रीमद् **विजयरामचन्द्रसूरीश्वरजी** महाराजा के ७०० प्रवचनों का सार श्रवण करते हुए, दर्जेदार कागज पर उसे स्वयं अपने हाथों से लिखा। १५० से अधिक विशिष्ट वाचनाओं का सारसंक्षिप्त का भी लेखन किया। श्रुतभवन में आने के पश्चात् लेश्या विषय की टिप्पणियां लिखने का उनका क्रम अविरत चालु रहा। यहीं पर आरंभसिद्धि एवं हीरकलश के मुहूर्तो के तुलनात्मक अभ्यास की विशिष्ट टिप्पणियां तैयार की।

अहमदाबाद में उनकी दीर्घकालीन स्थिरता के दरम्यान उन्होंने अनेक युवावर्ग को सन्मार्ग का परिचय करवाते हुए उनकी धर्मश्रद्धा को मजबूत बनाया। इस तरह का एक बडा वर्ग तैयार करने में, उनका बडा योगदान बना। इस प्रबुद्ध युवा वर्ग ने उनकी काफी सेवा की, इन्हीं में से अनेक मुमुक्षु उनकी प्रेरणा से दीक्षामार्ग का स्वीकार कर पाये।

प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयचन्द्रगुप्तसूरीश्वरजी** महाराजा के उपर उनकी विशेष आस्था रही। उन्हीं द्वारा अपने अनेक प्रश्नों का समाधान प्राप्त किया।

पिछले चार वर्षो से पूज्य मुनिराज **संवेगरतिविजयजी** म. सा. का स्वस्थ्य शिथिल रहने लगा। लीवर सोरियोसीस की बीमारी की ग्रस्तता और लीवर केंसर की पीडा में भी वे समता भाव से समृद्ध रहे। अंतिम कुछ दिन पूर्व अपनी ८० वर्ष की उम्र में भी प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयचन्द्रगुप्तसूरीश्वरजी** म. सा स्वयं चलकर उन्हें समाधि प्रदान करवाने पधारे।

अंतिम संस्कार विधि श्री **मनमोहन पार्श्वनाथ जैन संघ टिंबर मार्केट** के उपक्रम से संपन्न हुई। मध्याह्न २ बजे उनके देह का अंतिम दर्शन करने के लिए नाजुश्री समाज भवन में बडी संख्या में लोगों का तांता बना रहा। अंतिम संस्कार संबन्धी सभी लाभ उपस्थित जनसमुदाय ने बढचढकर प्राप्त किया। संध्यापूर्व ५ बजे मुक्तिधाम में अग्निसंस्कार संपन्न हुआ।

प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् **विजयचन्द्रगुप्तसूरीश्वरजी** महाराजा के निश्रा में देववंदन विधि संपन्न हुई, जिसमें पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् **विजयभव्यरत्नसूरिजी** म.सा., प. पू. आचार्यदेव श्रीमद् **भुवनरत्नसूरिजी** म. सा., प.पू. श्री **हितरत्नविजयजी** गणिवर तथा प. पू. श्री **मुक्तिप्रियविजयजी** गणिवर, साध्वीजी **स्वयंप्रभाश्रीजी** म.सा तथा साध्वीजी श्री **पियुषरेखाश्रीजी** म. सा. भी उपस्थित थें।

अग्निसंस्कार विधि के लिए श्री **मनमोहन पार्श्वनाथ टेंम्पल ट्रस्ट टिंबर मार्केट, श्री वासुपूज्य स्वामी टेंम्पल ट्रस्ट केम्प, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ टेंम्पल ट्रस्ट भवानी पेठ, तथा श्रुतभवन संशोधन केंद्र** के पदाधिकारी गण श्रुतभवन परिवार के श्रुतप्रेमी एवं पुणे शहर का विशाल जैन समुदाय उपस्थित था। उनकी अंतिम समय तक वैयावच्च सेवा का लाभ **श्रमण आरोग्यम् जितो** एवं अनेक व्यक्तिओं ने प्राप्त किया। पुना हॉस्पिटल के व्यवस्थापक श्री **देवीचंदजी जैन, डायाभाई शाह, भबूतमलजी जैन, डॉ. विनय थोरात, डॉ. अजित तांबोळकर, डॉ. संदिप वाजुल, डॉ. रेखा धनवानी,** और **डॉ. संदिप शाह** का सहकार्य शब्दातीत रहा। साध्वीजी श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म. सा. जब तक यहां रहे, उनका विशेष ध्यान रहता था। श्रुतभवन परिवार के **भरतभाई, सचिनभाई, मनोजभाई, आशुतोषभाई, राजेंद्रजी बाठीया, ललितजी गुंदेचा, ओमजी ओसवाल,** मेनेजर **कीर्तिभाई शाह** आदि की सेवा भक्ति के साथ सेवक **प्रदीप रूपनर** ने भी उनकी प्रत्यक्ष सेवा का अंतिम समय तक लाभ प्राप्त किया।

पदार्पण

श्रुतभवन में पू. आ. विजय **कुलचंद्रसूरिजी** म.सा., पू. पं. श्री **नयपद्मसागरजी** म. सा., श्री **प्रबुद्ध मुनिजी**, श्री **आशीष मुनिजी**, पू.सा. श्री **सुयशप्रज्ञाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा, पू. सा.श्री **सूर्यमालाश्रीजी** म.सा. की शिष्या पू. सा. श्री **प्रियश्रेयाश्रीजी** म.सा., पू.सा. डॉ. श्री **प्रतिभाश्री 'प्राची'**, पू. सा. श्री **सत्यसाधनाश्रीजी** आदि ठाणा, श्री **कैलाशजी सालेचा** (अध्यक्ष, श्री तिलकेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ, इंदौर।), श्री **संजय सिंघल** (संस्थापक – धरोहर डिजिटल केटलोग प्रोग्रेम), श्री **दिलीप शाह**, श्री **मनीषजी मोदी**, श्री **शांतीलालजी ओसवाल**, ऍड. श्री **योगेशजी मेहता** (Jito Minority Cell, Apex chairman), **आनंदाश्रम संशोधन संस्था**, पुणे द्वारा आयोजित हस्तलिखित कार्यशाळा के १६ विद्यार्थी एवं प्रशिक्षकों का पदार्पण हुआ।

कार्यविवरण

शास्त्र संशोधन प्रकल्प के अंतर्गत **लोकप्रकाश, श्रेयांसजिनचरित, अनेकार्थध्वनिमंजरी, वासवदत्ता आख्यायिका वृत्ति, जिनशतक टीका, तर्कभाषाचन्द्रिका, वनस्पतिसप्ततिका** का संपादन कार्य प्रवर्तमान है।

वर्धमान जिनरत्नकोश प्रकल्प के अंतर्गत पू. **निरज मुनिजी**, पू. मुनिश्री **देवर्षिवल्लभविजयजी** म.सा., पू. मुनिश्री **सुयशचंद्रविजयजी** म.सा., पू. आ. श्री **रत्नसंचयसूरिजी** म.सा., पू. सा. श्री **कुमुदरेखाश्रीजी** म.सा., **जितेंद्रभाई बी. शाह** को हस्तलिखित प्रत संबंधी माहिती प्रदान करने का लाभ मिला।

प्राचीन श्रुतसंपदा के समुद्धार के लिए समुदार सहयोग देनेवाले महानुभाव

- झेट्स कॉस्मेटिक प्रा. लि., मुंबई।
- श्री माणेकचंद नेमचंद शेठ चॅरिटेबल ट्रस्ट, मुंबई।
- श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट, संगमनेर।
- श्री जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक तपागच्छ संघ, इतवारी, नागपुर।
- श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन टेंपल ट्रस्ट, मानाजी कसनाजी धडा, भवानी पेठ, पुणे।
- सौ इलाबेन महेंद्रभाई शाह, पुणे।
- श्री हरेनभाई शाह, पुणे।
- पूज्य साध्वी श्री उद्योतदर्शनाश्रीजी म.सा. की प्रेरणा से श्री महावीर जिनालय, मैसुर।
- वीरविभु के ८० वें पट्टधर गच्छाधिपति पू. आ. पुण्यपालसू. म.सा. के संयमजीवन की अनुमोदनार्थ संघवी वीरचंद हुकमाजी परिवार आयोजित सामुहिक चातुर्मास प्रसंगे
- श्री मुनिसुव्रत स्वामी जैन श्वेतांबर मंदिर ट्रस्ट, कोल्हापूर
- गोडीजी महाराज जैन टेंपल एण्ड चेरिटीज, मुंबई।
- महोदय धाम स्मारक ट्रस्ट, पालडी, अहमदाबाद
- श्री सागर जैन उपाश्रय, पाटण
- शा. संघवी जिवराज फताजी मेडतिया हस्ते रतनभाई
- शा. बाबुलालजी उतमचंदजी बोकडीया हस्ते प्रकाशभाई
- शा. तेजराजजी उतमचंदजी बोकडीया हस्ते मनोजभाई
- शा. रमणलालजी धर्माजी ओसवाल
- शा. सोहनलालजी ताराचंदजी घीवाला
- शा. खुमचंदजी लुबचंदजी मेरी
- शा. रूपाजी नगाजी ओसवाल
- शा. घनश्यामजी मणिलालजी रामसीणा
- श्री शंखेश्वर महिला मंडळ, भवानी पेठ

महाराज साहेब समाचार

- दि. १०-११-१२/०५/२०१९ इन दिनों पूज्य पूज्य मुनिश्री **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. की निश्रा में श्री **संभवनाथ जैन मंदिर ट्रस्ट, नागपुर** आयोजित तीन दिनों की जैन कार्यशाळा संपन्न हुई। इसमें पूज्य गुरुदेव ने **जैन चित्रकला का रोचक इतिहास, भारतीय भाषाओं पर जैनदर्शन का प्रभाव एवं कनसेप्ट ओफ गोड इन जैनिझम** इन विषयोंपर व्याख्यान किया। दि. १३/०५/२०१९ से १८/०५/२०१९ तक श्री **उत्तराध्ययनसूत्र** का विशेष स्वाध्याय संपन्न हुआ।
- दि. १९/०५/२०१९ के दिन पूज्य पितृगुरुदेव मुनिश्री **संवेगरतिविजयजी** म.सा., पूज्य गुरुदेव श्री **वैराग्यरतिविजयजी** गणिवर एवं पूज्य गुरुदेव मुनिश्री **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. की ३६वी दीक्षा तिथि का समारोह संपन्न हुआ।
- दि. २३/०५/२०१९ के दिन वापी में पूज्य साध्वी श्री **जिनरत्नाश्रीजी** म.सा. की ३७ वी दीक्षा तिथि का समारोह संपन्न हुआ। चातुर्मास वापी में है।
- परम पूज्य मुनिश्री **प्रशमरतिविजयजी** म.सा. का चातुर्मास कामठी, नागपुर में है।

णालस्सेण समं सोक्खं, ण विज्जा सह णिद्दया ।
ण वेरग्गं ममत्तेणं, णारंभेण दयालुआ ।।
(निशीथ भाष्य)

आलस्य के साथ सुख का, निद्रा के साथ विद्या का, ममत्व के साथ वैराग्य का और आरंभ=हिंसा के साथ दयालुता का कोई मेल नहीं है।

Printed Matter

Posted under clause 121 & 114 (7) of P & T Guide

To,

From : Shrutbhavan Research Centre
(Initiation of Shrutdeep Research Foundation)
47/48, Achal Farm, Nr. Sachchai Mata Mandir, Ahead of Jain Agam Temple, Katraj, Pune-411046
Mo. 07744005728 Email : shrutbhavan@gmail.com Website : www.shrutbhavan.org

For Informative and Inspirational speeches about Shrut please subscribe our Shrutbhavan YouTube channel